Date
Page

पदों के निर्माण एवं चयन →

कक्षा में शिक्षक अपने छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का आकलन एवं मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न प्रकार के पदों का निर्माण करते हैं। अप्रमापीकृत परीक्षणों को शिक्षक निर्मित परीक्षण भी कहा जाता है। इसका निर्माण प्रायः कक्षा शिक्षक द्वारा किया जाता है। कक्षा शिक्षक अपनी आवश्यकतानुसार तत्काल कुछ प्रश्नों की रचना करके शिक्षक निर्मित परीक्षण बना लेता है। प्रमापीकृत परीक्षणों का निर्माण औपचारिक ढंग से परीक्षण की योजना बनाता है, प्रश्न बनाता है, प्रश्नों का तार्किक आधार पर चयन करता है तथा परीक्षण की विश्वसनीयता, वैधता तथा मानकों की गणना करता है। शिक्षक निर्मित परीक्षण अध्यापक की तत्कालीन आवश्यकता की पूर्ति तो करते हैं, परन्तु इनकी विश्वसनीयता तथा वैधता के सम्बंध में कोई प्रमाण नहीं होते हैं। इसके विपरीत प्रमापीकृत परीक्षण छात्रों की उपलब्धि का मापन विश्वसनीय तथा वैध ढंग से करते हैं। परीक्षण पदों को बनाते समय प्रश्नों की विभेदन क्षमता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। प्रश्न ऐसे बनाने चाहिए जिनमें जटिलता न हो तथा प्रश्न सदैव उद्देश्यों पर आधारित करके बनाने चाहिए।

पदों का निर्माण करना (construction of Items) →

प्रश्नों का निर्माण विशिष्टीकरण सारणी के अनुसार किया जाता है। इसके लिए सर्वप्रथम

Scanned with CamScanner

प्रश्नों के लिए निर्देश तैयार कर लिये जाते हैं। प्रश्नों का निर्माण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है। कि प्रश्नों तथा निर्देशों में प्रयुक्त भाषा एवं संकेत शब्दों के स्तर के अनुरूप होने चाहिए जितने प्रश्न अन्तिम परीक्षण में रखने होते हैं; प्रायः उससे दोगुना अधिक प्रश्नों की रचना की जाती है। प्रश्नों की रचना करते समय पूर्ववर्ती परीक्षणों में शामिल किये गये प्रश्नों से संकेत प्राप्त किये जा सकते हैं।

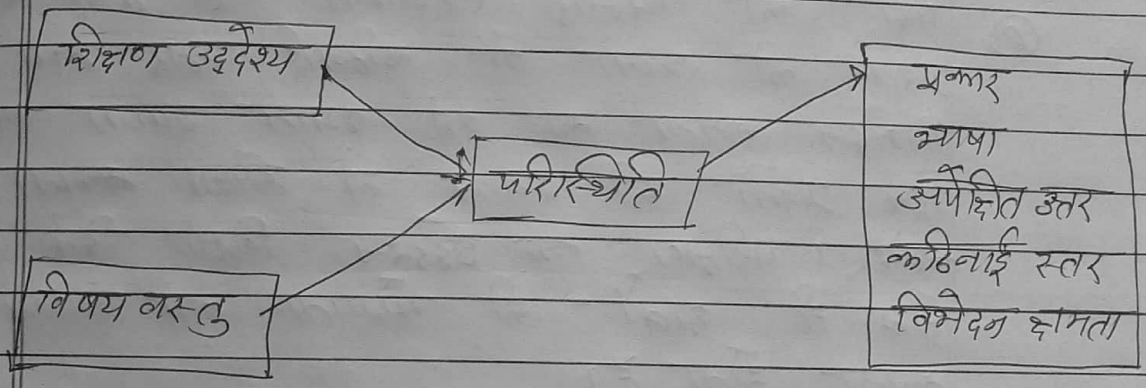

पदों की रचना करते समय ध्यान रखने योग्य बातें →

① पदों की रचना करने हेतु पाठ्य-पुस्तकों के वाक्य को यथावत नहीं दोहराना चाहिए। जहाँ तक हो सके परीक्षण निर्माण करने वाले को अपने शब्दों से ही प्रश्नों की रचना करनी चाहिए।

② प्रत्येक पद किसी एक विशिष्ट उद्देश्य की ओर केन्द्रित होना चाहिए। अतः कई प्रकार के कौशलों से सम्बंधित जटिल प्रश्नों का निर्माण नहीं करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Date ______
Page ______

(3) पद के उत्तर से सम्बंधित असार्थक बाधाओं को यथासंभव कम करने का प्रयत्न करना चाहिए।

(4) निदानात्मक परीक्षणों में सामूहिक त्रुटियों को ध्यान में रखते हुए सूक्ष्मतासूक्ष्म शिक्षण बिन्दुओं पर आधारित प्रश्न बनाने चाहिए।

(5) परीक्षण का प्रारूप इस प्रकार का होना चाहिए कि छात्र यह स्पष्ट रूप से समझ सके कि उन्हें क्या करना है तथा परीक्षण उनके उत्तरों का आकलन तथा मूल्यांकन किस रूप में करेगा।

(6) पदों को परस्पर सम्बंधित नहीं होना चाहिए। प्रश्नों की रचना में कठिनाई स्तर तथा विभेदन क्षमता का भी ध्यान रखना चाहिए। ट्रिक प्रश्नों की रचना से हमेशा बचना चाहिए। परीक्षण का उद्देश्य किसी दिये गये क्षेत्र में छात्रों की योग्यता का मापन करना होता है।

(7) प्रश्नों के उत्तर देने हेतु अनावश्यक संकेत प्रदान करने से हमेशा बचना चाहिए। अनावश्यक शाब्दिक सम्बंध-विशिष्ट निर्णय, व्याकरण असंगता, सही उत्तर की लम्बाई तथा सही उत्तर हेतु कोई क्रम न बन सके, इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

Scanned with CamScanner